Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 04, October, 2017, pp. 304-308

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की परामर्श एवं निर्देशन के लिए जागरूकता का अध्ययन

श्रीमती मीनाक्षी*
डॉ. साजिदा सादिक**

सारांश

शोधार्थी द्वारा शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक तथा व्यवसायिक इन पाँच घटकों को आधार मानकर विद्यार्थियों पर परीक्षणों को डाला गया है। प्राप्त निष्कर्षो के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यालयों में छात्रों की विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों भाग लेने में रूचि रहती है, व रोजगारोन्नमुखी होने के कारण अपनी दिनचर्या को नियमित रखते है तथा सहपाठ्यगामी क्रियाओं में भाग लेते है जबकि छात्राओ का पारिवारिक पक्ष की ओर झुकाव होने के कारण उनकी परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता मे अन्तर पाया गया है। विद्यालयी शिक्षक के द्वारा इस अन्तर को उचित विषय संबंधी दिशा निर्देश, अभिवृत्ति व रूचि परीक्षण, बुद्धि परीक्षण द्वारा उनको अभिप्रेरित करके, नवीन गतिविधियों का संचालन करके कम किया जा सकता है।

कुंजी बिन्दु–*परामर्श, निर्देशन, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, जागरूकता।*

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है इसमें वह समाज का एक उत्तरदायित्व घटक एवं राष्ट का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर अपने लक्ष्यों का प्राप्त करता है इन लक्ष्यों के निर्धारण व प्राप्ति के लिए बालक को उचित परामर्श– निर्देशन व मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।जिससे की छात्रो को उनकी जरूरतो एवं उनकी समस्याओं को समझने में मदद मिलती है और जो आगे चलकर उनके भावी भविष्य के निर्माण में सार्थक सिद्ध होती है। परामर्श एवं निर्देशन एक क्रिया है जिसके अनुसार एक व्यक्ति को सहायता प्रदान की जाती है जिससे वह अपने निर्णय ले सके, निष्कर्ष निकाल सके तथा अपने उदेद्श्यों को प्राप्त कर सके। परामर्श–निर्देशन द्वारा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व अपनी योग्यता, क्षमता तथा मानसिक स्तर का ज्ञान प्राप्त करता है। परामर्श दाता व निर्देशनकर्त्ता किसी भी समस्या का समाधान स्वयं नहीं करता है। वरन व्यक्ति को ही समस्या का समाधान करने योग्य बनाता है इस प्रकार परामर्श–निर्देशन का उदेद्श्य है कि मानव को उसकी शक्तियों का ज्ञान इस प्रकार करा दें कि वह अपनी शक्तियों को पहचान सकें। परामर्श–निर्देशन के द्वारा बालको की क्षमताओं, अभिरूचियों, रूचियों तथा व्यक्तित्व विकास संबंधी तथ्यो की जानकारी भी हो जाती है। तथा विद्यार्थी को सही समय पर दिशा निर्देशन प्रदान करके उसे भावी लक्ष्य की ओर उन्मुख किया जा सकता है।

समस्या का औचित्य –

प्राचीन काल में विद्यालयों व महाविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले विषयों की संख्या कम थी तथा विद्यार्थियों को उन विषयों से संबंधित जानकारी भी कम थी। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विविधताओं एवं जटिलताओं का बोलबाला है। इस कारण वर्तमान युग में बालक के सामने उसके भविष्य का प्रश्न खडा हुआ है। इस कारण वर्तमान

---

* शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** प्राचार्य, एम.के.बी. महिला बी.एड. महाविद्यालय, नेहरू नगर, पानीपेच, जयपुर, राजस्थान।

युग में परामर्श–निर्देशन शिक्षा का प्रमुख अंग बन गया है। जीवन के प्रत्येक स्तर पर व्यक्ति की दक्षताओ के अनुरूप वांछित व्यवसाय के चयन हेतु परामर्श एवं निर्देशन प्रति जागरूक होना अत्यन्त आवश्यक है। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक क्षेत्र के अतिरिक्त शैक्षिक क्षेत्र व व्यवसायिक क्षेत्र ऐसे क्षेत्र है जिसमें जागरूक होने की अत्यन्त आवश्यकता है।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की परामर्श एवं निर्देशन के लिए जागरूकता का अध्ययन।''

समस्या से उभरने वाले प्रश्न

- क्या परामर्श एवं निर्देशन के प्रति जागरूकता विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति का सही उपयोग तथा विकास में सहायक है?
- क्या परामर्श एवं निर्देशन के प्रति जागरूकता व्यक्ति के निजी जीवन की सफलता एवं संतोष की दृष्टि से लाभदायक है?
- क्या परामर्श एवं निर्देशन के प्रति जागरूकता आर्थिक दृष्टिकोण से आवश्यक होती है?
- क्या अध्यापकों की परामर्श–निर्देशन के प्रति जागरूकता छात्रो के भविष्य निर्माण व कैरियर चुनाव में सहायक सिद्ध होगी?

शोध के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन संबंधी जागरूकता का पता लगाना।
- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की परामर्श व निर्देशन संबंधी जागरूकता का पता लगाना।
- ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन संबंधी जागरूकता का पता लगाना।
- शहरी क्षेत्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन संबंधी जागरूकता का पता लगाना।
- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के परामर्श व निर्देशन को प्रभावित करने वाले कारको का पता लगाना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की परामर्श व निर्देशन के लिए जागरूकता बढाने के उपायो का सुझाव प्रदान करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध में निम्न परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की गई है–

- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्रीय छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्रीय छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्रीय गैर सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्रीय सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी क्षेत्रीय गैर सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी क्षेत्रीय सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालयों के शिक्षको की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श का चयन

शोध कार्य में अजमेर शहर के माध्यमिक स्तर के शिक्षको एवं कक्षा 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श से चयनित किया गया है:–

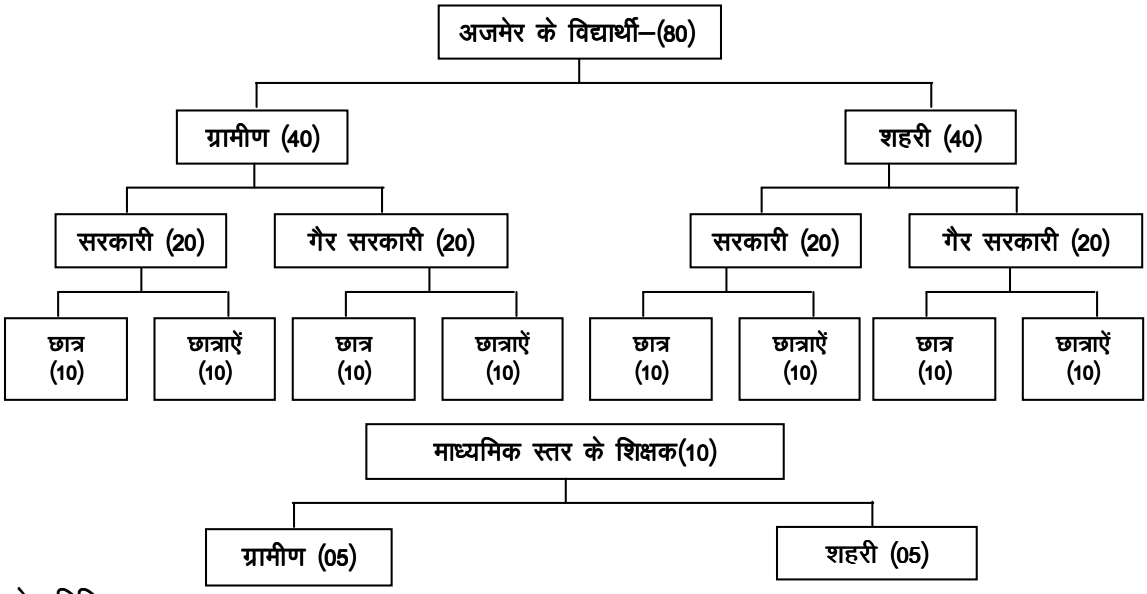

शोध विधि

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि

शिक्षकों का परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता के अध्ययन के लिए साक्षात्कार का चयन किया गया है।

चर

(क) स्वतंत्र चर –परामर्श व निर्देशन के लिए जागरूकता।

(ख) आश्रित चर– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

स्व–निर्मित उपकरण प्रश्नावली

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण

शोध से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए गए है–

प्राकल्पना–1 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्रीय छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

प्रथम परिकल्पना के अनुसार प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर छात्रों का मध्यमान 64.85 व मानक विचलन 6.79 प्राप्त हुआ तथा छात्राओं का मध्यमान 67.20 तथा मानक विचलन 6.85 प्राप्त हुआ है। गणना से प्राप्त दोनों समूहो की जागरूकता में अन्तर 'टी' मान – 0.50 प्राप्त हुआ है जो कि 0.01/ 0.05 सारणी मान पर 2.02 सार्थकता स्तर से कम है। अर्थात ग्रामीण क्षेत्रीय छात्रों की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता ग्रामीण क्षेत्रीय छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता के समान ही है तथा वह सामान्य जागरूकता रखते है। इसलिए इनमें सार्थक अन्तर नहीं पाया गया व प्रथम परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

प्राकल्पना–2 माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्रीय छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

प्राप्त प्रदत्तों के सारणी मान के आधार पर छात्रों का मध्यमान 72.50 व मानक विचलन 4.15 प्राप्त हुआ है तथा छात्राओं का मध्यमान 66.50 व मानक विचलन 6.25 प्राप्त हुआ है। सारणी मान से प्राप्त दोनों समूहों की जागरूकता में अन्तर 'टी' मान 3.59 प्राप्त हुआ है। जो कि 0.01/0.05 सारणी मान के 2.71 स्तर से अधिक है। इसलिए अजमेर जिले के माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्रीय छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में अन्तर पाया गया है। तथा दोनों के मध्यमानों के मध्य सार्थकता स्तर पर अन्तर होने के कारण द्वितीय परिकल्पना अस्वीकृत हुई है।

प्राकल्पना–3 ग्रामीण क्षेत्रीय गैर सरकारी विद्यालयो में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओ की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

ग्रामीण क्षेत्रीय गैर सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्रों का मध्यमान 66.70 व मानक विचलन 5.67 तथा छात्राओं का मध्यमान 71 व मानक विचलन 2.86 प्राप्त हुआ है। गणना से प्राप्त दोनों समूहो में जागरूकता में अन्तर 'टी' माना 3.04 प्राप्त हुआ है जो कि 0.01/0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीमान 2.88 से अधिक है इसलिए अजमेर जिले के ग्रामीण क्षेत्रीय गैर सरकारी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में अन्तर पाया गया है तथा तृतीय परिकल्पना अस्वीकृत हुई है।

प्राकल्पना–4 ग्रामीण क्षेत्रीय सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

प्राप्त प्रदत्तो के निष्कर्षो के आधार पर छात्रों का मध्यमान 63 व मानक विचलन 7.30 है व छात्राओं का मध्यमान 58.4 व मानक विचलन 9.04 है गणना से प्राप्त दोनों समूहों की जागरूकता में अन्तर 'टी' मान 1.25 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.10 से कम है अतः ग्रामीण क्षेत्रीय माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है तथा वह परामर्श और निर्देशन के प्रति सामान्य स्तर की जागरूकता रखते है अतः परिकल्पना स्वीकृत की गई है।

प्राकल्पना–5 शहरी क्षेत्रीय गैर सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

प्राप्त प्रदत्तो के निष्कर्षो के आधार पर छात्रों का मध्यमान 69.3 व मानव विचलन 3.31 है व छात्राओं का मध्यमान 65.7 व मानक विचलन 4.56 है गणना से प्राप्त दोनों समूहों की जागरूकता में अन्तर 'टी' मान 2.02 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.10 से कम है अतः शहरी क्षेत्रीय माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है तथा वह परामर्श और निर्देशन के प्रति सामान्य स्तर की जागरूकता रखते है अतः परिकल्पना स्वीकृत की गई है।

प्राकल्पना–6 शहरी क्षेत्रीय सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

शहरी क्षेत्रीय सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के छात्रों का मध्यमान 75.7 व मानक विचलन 2.1 है तथा छात्राओं का मध्यमान 73.9 व मानक विचलन 1.57 प्राप्त हुआ है गणना से प्राप्त दोनों समूहो की जागरूकता में अन्तर 'टी' मान 2.19 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के सारणी मान के प्रथम स्तर 0.05 (2.10) से अधिक है अतः प्रथम सार्थकता स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत हुई है

परन्तु द्वितीय सार्थकता स्तर पर परिकल्पना स्वीकृत की जाती है क्योंकि 'टी' 2.19 द्वितीय सार्थकता स्तर के सारणी मान 0.01 (2.88) से कम है इसलिए शहरी क्षेत्रीय सरकारी विद्यालयो में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता सामान्य स्तर की है तथा उसमे सार्थक अन्तर नहीं है।

प्राकल्पना–7 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालयों के शिक्षको की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालयों के शिक्षको की परामर्श व निर्देशन के प्रति जागरूकता का विश्लेषण साक्षात्कार द्वारा किया गया है अतः इनकी जागरूकता के प्रति साक्षात्कार के विश्लेषण से प्राप्त हुआ है कि शिक्षको(ग्रामीण+शहरी) को परामर्श व निर्देशन के प्रति पूर्ण जानकारी है तथा वह माध्यमिक स्तरीय पाठ्यक्रम में इसे सम्मिलित कराना चाहते है वह छात्रों को भी इस क्षेत्र से अवगत कराने हेतु वह विद्यालयों में विभिन्न विज्ञान मेलों, सहपाठ्गामी क्रियाएँ, सामुदायिक शिविरों, व्यवसाय संबंधी पत्र–पत्रिकाएँ, शैक्षिक भ्रमण, कैरियर डे आदि का आयोजन व संचालन करते है ताकि छात्रों को उनके कैरियर चुनाव संबंधी सूचनाओ से अवगत करा कर भविष्य के निर्धारण में सहायता प्रदान करे।

संदर्भ ग्रन्थ

- Nayak, A.K , Rao, V.K (2004) ; "Guidance & career counselling", APH Publishing corporation,5, Ansari Road, Darya ganj, New Delhi.
- Sharma, sita Ram (2005) ; "Evaluation of Educational & Vocational Guidance", ABD, Publishers, Jaipur, India.
- Sharma,V.K(2005); "Encyclopaedia Of Educational & Vocational Guidance", Commonwealth.
- अरोडा, प्रो. रीता, मारवाहा, सुदेश,(2007); ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी'', शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान।
- ओड़, प्रो. एल.के.(2007);''शैक्षिक प्रशासन'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।
- अग्रवाल, जे.सी(2008);''शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–7, उत्तर प्रदेश।
- अस्थाना, विपिन, अस्थाना, श्वेता, (2008);''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–7, उत्तर प्रदेश।
- रायजादा, बी.एस. वर्मा, वंदना, (2008);''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।
- सरीन, शशिकला, सरीन, अंजनी,(2008);'' शैक्षिक अनुसंधान विधियां'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2, उत्तर प्रदेश।
- त्रिपाठी, नरेश चन्द्र, बिहारी लाल, विश्वनाथ(2008),''शिक्षा के नूतन आयाम'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–7, उत्तर प्रदेश।

❑❑❑